हिमाचल अभी अभी

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 5 अंक 31 धर्मशाला। शनिवार, 18 अप्रैल -24 अप्रैल, 2020 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 06 वैशाख, विक्रमी संवत् 2077 कुल पृष्ठ 12 मूल्य ₹5 Postal Regn.No. DGPUR/26/15-17

बनी रहेगी सुख समृद्धि...

-पढ़ें पेज 2 पर

वरूथिनी एकादशी

वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी वरूथिनी एकादशी के नाम से प्रसिद्ध है, जो इस वर्ष 18 अप्रैल दिन शनिवार को है। वरूथिनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु की पूजा अर्चना विधि विधान से की जाती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, वरूथिनी एकादशी का व्रत और पूजा करने से व्यक्ति को 10 हजार वर्षों तक की तपस्या का फल और पुण्य प्राप्त होता है, साथ ही व्यक्ति के समस्त पापों का नाश हो जाता है। वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का प्रारंभ 17 अप्रैल 2020 दिन शुक्रवार शाम 08 बजकर 03 मिनट पर हो रहा है, जो 18 अप्रैल 2020 दिन शनिवार को रात 10 बजकर 17 मिनट पर समाप्त होगा। ऐसे में वरूथिनी एकादशी का व्रत शनिवार को रखा जाएगा।

पारण करने का समय 19 अप्रैल 2020 दिन रविवार को सुबह 05 बजकर 51 मिनट से सुबह 08 बजकर 27 मिनट तक है। आपको इस समय काल में ही पारण कर व्रत को पूर्ण करना है।

व्रत एवं पूजा विधिः एकादशी के दिन प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त हो जाएं। इसके बाद स्वच्छ कपड़े पहनकर हाथ में जल और पुष्प लेकर व्रत का संकल्प लें। सुबह 07:29 बजे से 09:06 बजे के मध्य पूजा संपन्न करें। यह फलदायी और मंगलकारी होगा। पूजा स्थान पर एक चौकी पर भगवान विष्णु की मूर्ति या तस्वीर को स्थापित करें। अब शुभ समय में उनका गंगा जल से अभिषेक कराएं। अब उनको पीले फूल, अक्षत, धूप, चंदन, रोली, दीप, फल, तिल, दूध, पंचामृत आदि अर्पित करें। इसके बाद श्रीहरि को पीले मिष्ठान या चने की दाल तथा गुड़ का भोग लगाएं। इसके बाद आप विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें। अब भगवान विष्णु की आरती करें। इसके पश्चात दिनभर फलाहार करते हुए भगवत वंदन करें। रात्रि में श्री हरि कथा का पाठ, भजन-कीर्तन करते हुए जागरण करें। अगले दिन द्वादशी को भगवान विष्णु की पूजा करें। ब्राह्मण को दान दक्षिणा दें। फिर पारण के समय में पारण कर व्रत को पूरा करें।